का चारित्रिक भी हो सकता है। यह अनौपचारिक शैली है। इसकी तुलना में दूसरा वाक्य औपचारिक शैली का है। किसी को आज्ञा देना अथवा अनुरोध करने वाले वाक्यों में भी प्रयोग के आधार पर अंतर होता है।

(घ) सहप्रयोगार्थ- इसमें दो शब्दों के एक साथ प्रयोग से अर्थ में अंतर आ जाता है। उदाहरणार्थ 'आँख' और 'लगना' इन दोनों शब्दों के एक साथ प्रयोग से अर्थ नया आयाम देता है। फिर भिन्न-भिन्न संदर्भों में इसके भिन्न-भिन्न अर्थ भी होते हैं, जैसे (किसी की) आँख लगना = नींद आना, (किसी पर) आँख लगना (पाने की लालसा), (किसी से) आँख लगना - प्रेम होना, आदि।

(ङ.) सम्पृक्तार्थ- इसे लक्ष्यार्थ भी कहा जाता है। कई बार हम भाषा में ऐसे अर्थ ग्रहण करते हैं जो मूल अर्थ में नहीं हो सकता। जैसे 'दवा कड़वी है। (स्वाद में कड़वी), उसने कड़वी बात कह दी (सुनने में बुरी)। इसी प्रकार 'पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून' में 'पानी' के तीन अर्थ 'चमक' 'इज्जत' और 'जल' सम्पृक्तार्थ के ही उदाहरण हैं। अर्थात एक ही शब्द अथवा वाक्यों में एक से ज्यादा अर्थ सम्पृक्त हो। पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्दों का अध्ययन भी इसी आधार पर किया जाता है।

(2) प्रोक्ति स्तर- एक से अधिक वाक्यों के समुच्चय को प्रोक्ति कहते हैं। जब हम किसी के सामने अपने विचार अभिव्यक्त करना चाहते हैं तो एक से अधिक वाक्यों की आवश्यकता पड़ती है। विधा की दृष्टि से प्रोक्ति कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, गीत, निबन्ध अथवा इनका कोई अंश भी हो सकता है। भाषा में प्रोक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है परन्तु इसे भाषा-संरचना का मूलभूत अंग मानने पर एक राय नहीं है।

(3) वाक्य स्तर- भाषा की सहज तथा सबसे बड़ी इकाई वाक्य को मानना चाहिए। एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं। भाषायी कौशल के निर्माण वाक्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। ~~वाक्य~~ एक सही वाक्य

Scanned by TapScanner